PG(Sem-II)
Paper – MPOLCC-9   Pol. Science   Dr. S. B. Kumar

भारत में दलीय व्यवस्था अथवा दलीय राजनीति के विभिन्न चरण : Different phases of Indian Party system :

भारत में दलीय व्यवस्था के इतिहास का अध्ययन मुख्यतः सात चरणों में किया जा सकता है जो निम्नलिखित है :

1. प्रथम चरण : आंदोलनकारी दलीय व्यवस्था [स्वतंत्रता से पूर्व]
1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना ने भारत में राजनीतिक दल के इतिहास की शुरुआत कर दी। हालांकि प्रारंभ में इसे भारतीय जनता और अंग्रेज प्रशासन के बीच कड़ी के रूप में स्थापित किया गया था लेकिन धीरे-धीरे यह संपूर्ण भारत के प्रतिनिधि के रूप में विकसित हुई। 1905 में बंग-भंग के पश्चात 1906 में अखिल भारतीय मुस्लिम लीग की स्थापना हुई। 1907 में कांग्रेस के सूरत अधिवेशन में कांग्रेस का विभाजन हुआ – गरमपंथी एवं नरमपंथी गुटों में। 1920 में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना हुई। इसके पहले 1909 में हिंदु महासभा का गठन हो चुका था। दलितों को प्रतिनिधित्व प्रदान करने वाली इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी (ILP) की स्थापना 1936 में हुई। 1942 में डा० अंबेडकर ने ILP को समाप्त कर शेडयूल्ड कास्ट फेडरेशन (SCF) की स्थापना की। स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व दलीय व्यवस्था एक आंदोलन के रूप में थी। इस काल में कांग्रेस सहित सभी छोटे दल राष्ट्रवादी आंदोलनों में भाग लिया। इस कारण इस व्यवस्था को आंदोलनकारी दलीय व्यवस्था के रूप में प्रदर्शित करता है।

2. द्वितीय चरण (1947 से 1967) : कांग्रेस सिस्टम अथवा एक दलीय व्यवस्था
स्वतंत्रता के उपरांत भारत में भारतीय दलीय व्यवस्था को W. H. Morris-Jones जैसे विचारक ने एक दलीय प्रभुत्व (One party dominant System) के रूप में, तो रजनी कोठारी ने ~~एक दलीय प्रभुत्व~~ इसे 'कांग्रेस सिस्टम' के रूप में दिखाया है। इस काल में कांग्रेस केन्द्र और ~~सभी~~ अधिकांश राज्यों में सत्ता में थी जिससे कांग्रेस का पूरे देश में एकछत्र प्रभुत्व हो गया। स्वतंत्रता से पूर्व हुए राष्ट्रवादी आंदोलनों में कांग्रेस पार्टी ने केन्द्रीय भूमिका निभाई ~~थी~~ तथा स्वतंत्रता के पश्चात् स्वयं को राजनीतिक दल के रूप में रूपांतरित किया। कांग्रेस की इसी आंदो-

Scanned with CamScanner

- जन कारी व्यक्ति के कारण कांग्रेस भारत में सबसे लोकप्रिय तथा एकमात्र प्रभुत्व वाला दल बन गया। यद्यपि कई विरोधी दलों का भी निर्माण हुआ, फिर भी कांग्रेस ने अपनी विशिष्ट पृष्ठभूमि के कारण जनसमूह के समर्थन और विश्वास को बनाए रखते हुए सबसे प्रमुख दल ~~के रूप~~ बनने में सफलता प्राप्त की।

3. तीसरा चरण (1967 से 1971): राज्य स्तर पर दलीय व्यवस्था में विखंडन एवं गठबंधन सरकार का काल: 1967 में हुए चतुर्थ आम चुनावों ने कांग्रेस की नींव हिला दी। केन्द्र के स्तर पर तो कांग्रेस सरकार बचाने में सफल रही लेकिन विधान सभा चुनावों में कांग्रेस 16 राज्यों में से 8 राज्यों में चुनाव हार गई और कई क्षेत्रीय दल सशक्त होकर उभरे। आठ राज्यों में गैर-कांग्रेसी सरकार की स्थापना ने एक नए युग का सूत्रपात किया। 1969 में कांग्रेस का विभाजन, कांग्रेस के अंदर मजबूत 'कॉकस' (गुट) का निर्माण तथा मूल्य वृद्धि, बेकारी, भ्रष्टाचार के कारण जनता का कांग्रेस से मोहभंग हो गया। अनेक राज्यों में जनता ने कांग्रेस के विकल्प के रूप में क्षेत्रीय दल को समर्थन देकर कांग्रेस की जड़ को कमजोर बना दिया।

4. चौथा चरण (1971 से 1977): कांग्रेस पार्टी का पुनरुत्थान: 1971 के लोक सभा चुनावों में अपनी स्थिति मजबूत करने के बाद इंदिरा गांधी ने 1972 के विधान सभा चुनावों में भी जबरदस्त वापसी की। 1972 में 14 राज्यों और 2 केन्द्रशासित प्रदेशों में हुए विधानसभा चुनावों में कांग्रेस (इ) को लगभग 71 प्रतिशत सीटों पर विजय मिली। विपक्ष की बुरी पराजय हुई और कई राष्ट्रीय दल क्षेत्रीय दल के रूप में परिवर्तित हो गए थे। इंदिरा द्वारा कांग्रेस को पुनर्स्थापित किया गया जिसे कुछ विद्वानों ने 'रीविजटिंग कांग्रेस सिस्टम' के रूप में भी इंगित किया है। फिर भी कांग्रेस सिस्टम उसी रूप में स्थापित नहीं हुआ जैसा 1967 तक था।

5. पांचवा चरण (1977-1979): अल्पकालिक संक्रमण: केन्द्रीय स्तर पर कांग्रेस पार्टी का पतन एवं जनता पार्टी का उदय — 1977 के छठे आम चुनावों के परिणाम ने भारतीय राजनीति में अभूतपूर्व स्थिति उत्पन्न की। लगातार 30 वर्षों के शासन के उपरांत छठे लोक सभा चुनाव

Scanned with CamScanner

तथा इसमें कांग्रेस को खासकर मध्य व उत्तर भारत में मिली पराजय ने भारतीय दलीय व्यवस्था का स्वरूप ही बदल दिया। आपातकाल (1975-77) की नीति, सभी राजनीतिक दलों के मुख्य नेताओं का जेल जाना तथा जेल में ही गठबंधन की नीति पृष्ठभूमि तैयार होना इत्यादि ने जनता पार्टी को जन्म दिया। इस प्रकार संगठित विपक्ष- ~~जनता~~ कांग्रेस (ओ), भारतीय लोक दल, जन संघ तथा स्वतंत्र पार्टी इत्यादि - जनता पार्टी के संघटक बने। विपक्ष की एकजुटता ने जनसमूह को कांग्रेस के विरुद्ध कर दिया। 1977 के चुनावों के बाद ऐसा प्रतीत हो रहा था कि भारतीय दलीय व्यवस्था में 'एक दलीय प्रभुत्व व्यवस्था' का अंत कर द्वि-दलीय व्यवस्था का पदार्पण हो गया है। जनता पार्टी मजबूत होकर उभरी फिर भी कांग्रेस अभी मरणासन्न नहीं हुई थी।

6.) छठा चरण (1980-89): इंदिरा एवं राजीव शासन काल के तहत कांग्रेस का पुनरुत्थान - 1977-80 की स्थिति द्वि-दलीय व्यवस्था की ओर संकेत कर रही थी लेकिन द्वि शक्ति वाले केन्द्र की यह स्थिति लंबे समय तक कायम न रह सकी। जनता पार्टी आपसी फूट की शिकार होकर बिखर गई। 1980 के चुनावों में कांग्रेस ने इंदिरा के नेतृत्व में फिर से वापसी की तथा इंदिरा व राजीव गांधी के नेतृत्व में 'कांग्रेस सिस्टम' को चरितार्थ करने का पुनः प्रयास किया गया। यह नौवें लोक सभा चुनाव (1989) के पूर्व तक क्रमोवेश लागू रहा। 1984 में इंदिरा गांधी की हत्या के बाद राजीव गांधी द्वारा समय पर घोषित चुनाव में भी कांग्रेस को राजीव के नेतृत्व में लोक सभा में 404 सीटें हासिल हुई। कुल मिलाकर इस चरण में कांग्रेस ने जबरदस्त वापसी कर 'कांग्रेस सिस्टम' को पुनः स्थापित करने का प्रयास किया था।

7.) सातवां चरण (1989 से अब तक) - केन्द्रीय स्तर पर राष्ट्रीय दल के नेतृत्व में क्षेत्रीय दलों की गठबंधन सरकार (Coalition Govt.) - 1989 में हुए नौवें लोक सभा चुनाव से लेकर ~~1999~~ 1998 में हुए बारहवीं लोक सभा चुनाव तक दलीय व्यवस्था 'एक दल प्रधान' की अवस्था प्राप्त नहीं कर सकी। भाजपा की लगातार मजबूत होती स्थिति तथा कांग्रेस का क्रमिक ह्रास में द्वि-दलीय

Scanned with CamScanner

अवस्था की संभावना को बल प्रदान किया लेकिन किसी भी चुनाव में न तो कांग्रेस और न ही भाजपा स्पष्ट बहुमत हासिल कर सकी। उनकी इसी असफलता तथा उत्पन्न हुई रिक्तता (vaccum) ने क्षेत्रीय दलों को आगे आकर सरका- राष्ट्रीय स्तर पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराने का अवसर दिया। इस दौरान बड़े दल छोटे दलों को बाहर से समर्थन देकर सरकार बनाने का अवसर दिया। किंतु ऐसी कोई भी सरकार अपने कार्यकाल का एक वर्ष भी पूरा नहीं कर सकी। 1989 – 1998 तक की स्थिति को दलीय व्यवस्था के संक्रमण काल के रूप में भी जाना जाता है।

द्वि-ध्रुवीय व्यवस्था की ओर भारतीय दलीय व्यवस्था का रूपांतरण – (1999 – अबतक) – 1989 से 1999 तक के काल में दलीय व्यवस्था का कोई स्पष्ट स्वरूप उभर कर सामने नहीं आया बल्कि गठबंधन टूट व बिखर रहे थे। गठबंधन का निर्माण भी चुनाव के बाद हो रहा था। 1998 में बनी राजग (NDA) की सरकार स्थायित्व प्राप्त नहीं कर सकी। किंतु 1999 में हुए तेरहवीं लोक सभा चुनाव में राजग (NDA) 24 दलों के गठबंधन के साथ सत्ता में आई और पांच वर्ष का अपना कार्यकाल भी पूरा किया। कांग्रेस ने भाजपा से सीख लेते हुए 2004 में ~~ध~~ संप्रग (UPA) के रूप में लगातार दो चुनावों तक केन्द्र में सत्तासीन रही। लेकिन UPA सरकार में भ्रष्टाचार के मुद्दे ने ~~जनमानस को~~ पुनः 2014 में राजग (NDA) की ~~सरकार को~~ गठबंधन को मौका दे दिया। 2019 में हुए लोक सभा चुनाव में राजग पुनः सत्ता में वापसी कर ली है।

अतः उपरोक्त अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि भारत में दलीय व्यवस्था की प्रकृति बदलती रही है। 1967 के बाद अल्प अवधि को छोड़कर कांग्रेस अकेले ~~दम~~ पर केन्द्र की सत्ता में वापसी नहीं कर सकी। यहाँ तक कि अधिकांश राज्यों में भी कांग्रेस सत्ता में नहीं है। राजग और संप्रग का प्रयोग सफल मालूम पड़ता है क्योंकि 2014 के लोक सभा चुनाव में भाजपा को अकेले बहुमत आने के बाद भी राजग की गठबंधन सरकार ही केन्द्र में कायम रही और 2019 के चुनाव में भी ऐसा ही देखने को मिला।

Scanned with CamScanner